खण्ड 10, संख्या 7(जुलाई)2022

पुस्तकालय में नया संग्रह

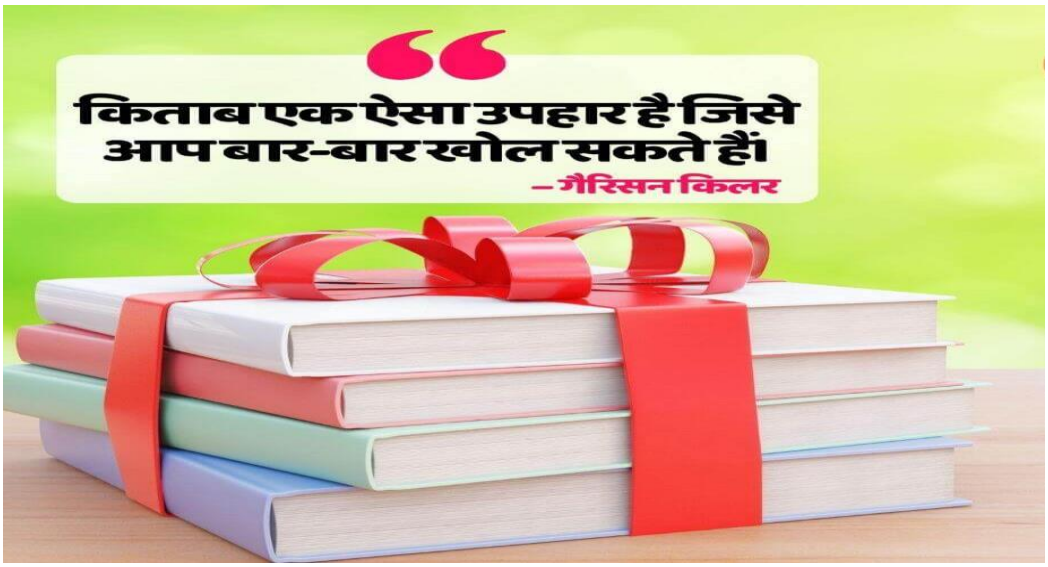

नया संग्रह जुलाई 2022

द्वारा संकलित

श्री कुमार संजय, निदेशक (पुस्तकालय)

श्रीमती इन्दिरा रानी , सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी

श्रीमती वर्षा सतीजा ,पुस्तकालय सूचना सहायक

नीति आयोग पुस्तकालय

1. अच्छा आदमी/ पंकज मित्र

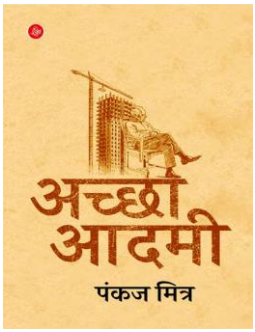

आज हमारे आसपास सबसे अच्छा आदमी कौन है? वह कौन है जो सबसे ज़्यादा मुस्कुराता हुआ आपके पास आता है, आपसे हाथ मिलाता है, आपके हालचाल लेता है, आपके अपनों से भी ज़्यादा आपका अपना हो जाता है, कौन है वह जिसके पास आपकी तमाम शंकाओं, परेशानियों, उलझनों का उपचार है, समाधान है? कौन है जो आपको आपके बारे में वह भी बता देता है जो आप नहीं जानते? आपकी इच्छाओं, कामनाओं, वासनाओं-लिप्साओं पर सतत शोधरत वह कौन है, जो आपके चाहने से भी पहले आपकी चाह को सन्तुष्ट कर देता है? इन सभी सवालों का जवाब एक ही है—बाज़ार, जिसकी अलग-अलग भंगिमाओं की व्याख्या पंकज मित्र ने अपने इस नए संग्रह की कई कहानियों में की है। बाज़ार को विस्तार के लिए हर दिन और जगह चाहिए, और ज़मीन चाहिए, इसके लिए वह हमें लालच देता है, हमारी अधूरी लालसाओं को उकसाता है, हमें अपने पाले में लेने की कोशिश करता है, और तब भी अगर उसे अपनी इच्छा पूरी होती न दिखे तो मँगरा की तरह आपकी ज़मीन पर सीधे क़ब्ज़ा कर लेता है, वहाँ एक मॉल बना देता है जिसकी हिमायत में अच्छा आदमी के प्रोफ़ेसर जैसे कुछ लोगों के अलावा समाज का हर व्यक्ति खड़ा मिलता है। उनके अपने बीवी-बच्चे तक। वह हर तरफ़ से आता है, और आपके जीवन की हर समस्या का समाधान आपको देता है, हर प्रश्न का जवाब, हर दिक़्क़त के लिए एक सुविधा, एक 'ऐप'। बस एक मूलभूत प्रश्न का जवाब ही उसके पास नहीं कि जिन साधनों का विशाल गट्ठर वह बाँधे फिरता है, उसे ख़रीदने के लिए पैसे अगर आपके पास न हों तो क्या करें? और आप जब यह पूछते हैं, आपको बाहर कर दिया जाता है, कभी ग़ायब, कभी ग़ैरज़रूरी। कुछ और भी प्रश्न हैं जिनके जवाब उसके पास नहीं, लेकिन जिनका इस्तेमाल वह बख़ूबी कर लेता है, मसलन हमारा जाति-अहंकार, राजनीतिक-सामाजिक अनैतिकताएँ, नौकर-शाही की उठापटक और ताक़त की अन्य अनेक क़िस्में। पंकज मित्र इन कहानियों में हमारी इन परतों को भी उघाड़ते हैं। ग्रामीण समाज के मनोविज्ञान पर उनकी सहज पकड़ है साथ ही विकास की असन्तुलित धारा के साथ उभरती विडम्बनाओं को पकड़ने का कौशल भी जो इन कहानियों में बख़ूबी प्रकट हुआ।

प्रकाशक: राजकमल

आह्वान संख्या: 891.4331 M679A **अधिकरण संख्या: 157375**

2. अनमोल प्रसंग/ सुधा मूर्ति

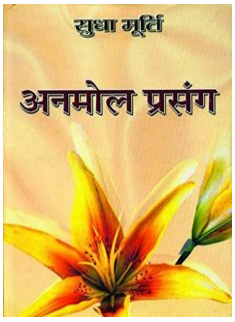

प्रख्यात कन्नड साहित्यकार श्रीमती सुधा मूर्ति का नाम साहित्याकाश में जाज्वल्यमान् नक्षत्र की भांति आलोकित है। उन्होंने अपने व्यक्तित्व को मात्र गृहस्थी के साँचे में नहीं ढलने दिया। वह अपनी नसों में शिक्षक के खून के साथ जनमी थीं, परंतु वह शिक्षकों की भीड़ में सिर्फ एक और चेहरा बनकर ही नहीं रहीं। वह जनजातीय वनों, गरीबी से पीड़ित गाँवों और बीमारियों से तबाह समुदायों में गईं। उनका कार्य उनका मिशन है। यह पुसाक उनके कार्य तथा उसके प्रति उनकी प्रवृत्ति-दोनों का जीवंत वर्णन करती है। उन्होंने इस पुस्तक में अपने व्यक्तिगत अनुभवों, अपनी यात्राओं तथा असामान्य व्यक्तित्वोंवाले सामान्य व्यक्तियों के साथ अपनी मुलाकातों का वर्णन किया है। उन्होंने कई राज्यों की विस्तृत यात्रा की और हजार से अधिक गाँवों में गईं। वहाँ उन्होंने तमाम ऐसे व्यावहारिक ज्ञान और अनुभव बटोरे, जो मनुष्य जीवन को सुखद, सार्थक बनाने में महती भूमिका अदा करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में वर्णित सभी प्रसंग लेखिका के जीवन के भोगे हुए अनुभवों पर आधारित हैं। हमें पूर्ण विश्वास है, यह पुस्तक पाठकों को सुखी, सफल एवं सार्थक जीवन जीने हेतु प्रेरणा प्रदान करेगी तथा उनके व्यक्तित्व को निखारने एवं सँवारने में सहायक सिद्ध होगी।

प्रकाशक: प्रभात

आह्वान संख्या: 891.433 M972A **अधिकरण संख्या: 157366**

3. कश्मीर: इतिहास और परम्परा/ कुमार निर्मलेन्दु

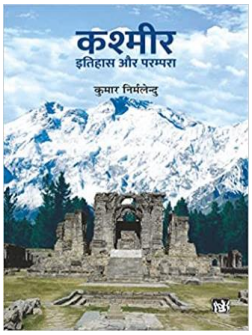

नीलमत पुराण' में कहा गया है कि कश्मीर स्वाध्याय एवं ध्यान में मग्न रहनेवाले और निरन्तर यज्ञ करनेवालों की भूमि रही है। यह हिमालय-पर्वतमाला की गोद में बसा एक सुरम्य प्रदेश है। लेकिन अपनी दुर्गम भौगोलिकता के कारण यह बाह्य-जगत् की पहुँच से दूर रहा है। प्राचीन काल में कश्मीर प्रदेश गन्धार जनपद के अन्तर्गत आता था। सातवीं शताब्दी ई .के प्रारम्भ में यहाँ नाग जाति के कर्कोटक राजवंश का उदय हुआ; जिसके संस्थापक दुर्लभवर्द्धन के समय से कश्मीर का व्यवस्थित इतिहास मिलता है। उनके पौत्र ललितादित्य ने गुप्तोत्तर काल में एक साम्राज्य खड़ा किया; और प्रसिद्ध मार्तण्ड-मन्दिर का निर्माण भी कराया। 1339 ई .तक कश्मीर एक स्वशासित हिन्दू राज्य था। परन्तु मध्यकालीन हिन्दू राजाओं की दुर्बलता और उनके सामन्तों के षड्यन्त्रों के कारण वहाँ का वातावरण अराजक हो गया, जिसका लाभ उठाते हुए 1339 ई . में शाहमीर नामक एक मुसलमान ने कश्मीर के सिंहासन पर कब्जा कर लिया। कल्हण ने 'राजतरंगिणी' में ललितादित्य से कहलवाया है कि "इस देश को सुशासित तथा प्रगतिशील बनाये रखने के लिए अन्तर्कलह से बचना आवश्यक है।" इसके कारण कश्मीर ने भारी कीमत चुकाई है। 'नीलमत पुराण' साक्षी है कि महर्षि कश्यप के समय से ही कश्मीर के स्थानीय लोगों ने विस्थापन की गहरी पीड़ा को महसूस किया है और आधुनिक काल में कश्मीरी हिन्दुओं को विस्थापन ने जितने दर्द दिये हैं, वह तो अकथनीय है।

प्रकाशक: लोकभारती

आह्वान संख्या: 954.6 N577K **अधिकरण संख्या: 157374**

4. ‘माया ने घुमायो/ मृणाल पाण्डे

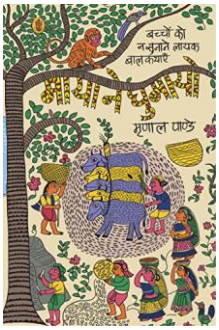

‘माया ने घुमायो’ उन कहानियों की आधुनिक प्रस्तुति है जो हमें वाचिक परंपरा से मिली हैं। ये कहानियाँ अपनी कल्पनाओं, अतिरंजनाओं और अपने पात्रों के साथ सुदूर अतीत से हमारे साथ हैं और मानव समाज, उसके मन-मस्तिष्क के साथ मनुष्य की महानताओं-निर्बलताओं का गहरा तथा सटीक अध्ययन करती रही हैं। बिलकुल नानी-दादियों की उन कहानियों की तरह जिन्हें हमारी कई पीढ़ियों ने बचपन में सुना, और दुनिया को अपनी तरह से समझा जो एक ही समय में इतनी विराट, इतनी क्षुद्र, इतनी कठिन और इतनी सहज होती है। इन कहानियों में वर्चस्व की लिप्सा है, आतंक है, कमजोरों की दीनता और असहायता है, चालाक गीदड़ है, आतंकी सिंह है, और साथ ही है हमारी समकालीन राजनीति और आसपास के सामाजिक-आर्थिक तंत्र में नए-नए आए जुमलों और शब्दों की बुनत जो इन कथाओं को अनायास ही हमारे आज की 'सत्यकथा' में बदल देती हैं। यही वह बिन्दु है जहाँ बच्चों को पूरी-पूरी समझ में आ जाने वाली ये कहानियाँ पाठक से एक वयस्क मस्तिष्क की माँग करने लगती हैं। वे आधारभूत सत्य, जिजीविषा की वे आदिम प्रेरणाएँ जो इस दुनिया को गति देती हैं, इसे 'रहने' और 'नहीं रहने' लायक बनाती हैं और जिनके कारण ही हर कला, हर कथा को अपने होने का तर्क मिलता है, और जो हर किस्म की प्रगति के बावजूद मनुष्य मन के दरवाजे पर अपना प्राचीन लट्ठ लिये पहरा देती आई हैं, लोककथाएँ उन्हें ही अपना खाद-पानी बनाती आई हैं। मृणाल पाण्डे ने यहाँ उसका प्रयोग अपनी सक्षम और प्रवहमान भाषा और गहरी सामाजिक-राजनीतिक समझ के साथ किया है।

प्रकाशक: राधाकृष्णा

आह्वान संख्या: 891.4331 P189M **अधिकरण संख्या: 157370**

5. एंजेल्स एंड डिमन्स/ डैन ब्राउन

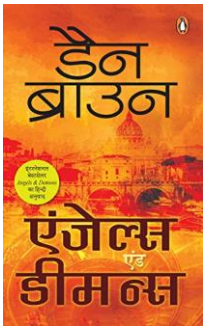

स्विटज़रलैंड के एक विश्व विख्यात संस्थान के वैज्ञानिक की निर्मम हत्या कर दी जाती है और उसकी छाती पर रहस्यमय चिह्न पाया जाता है। उधर रोम के वेटिकन में कार्डिनलों का समूह नए पोप के चुनाव के लिए इकट्ठा होता है। वहीं पर कहीं ज़मीन के नीचे एक अत्यधिक विस्फोटक क्षमता वाला बम रखा हुआ है जो कुछ ही देर में फटने वाला है। वक्त बहुत कम है। हारवर्ड के प्रोफेसर रॉबर्ट लैंग्डन को उन प्राचीन संकेतों के रहस्य की गुत्थी सुलझानी है जिनकी साजिश इल्यूमिनिटी कर रहे हैं। इल्यूमिनाटी करीब चार सौ साल पहले विलुप्त हो चुका एक गुप्त संगठन है और उसका अब पुनर्जन्म हो गया है। वे लोग कैथोलिक चर्च को नेस्तनाबूत करने के अपने ख़तरनाक मंसूबे को पूरा करना चाहते हैं। क्या उनका मंसूबा पूरा होगा? क्या वे अपनी साजिशों में कामयाब हो पाएँगे? मशहूर उपन्यासकार डैन ब्राउन का यह उपन्यास इन्हीं सनसनीखेज सवालों की पड़ताल करता है जिसे दुनिया में करोड़ों लोग पढ़ चुके हैं। यह एक मशहूर साइंस फ़िक्शन है जिस पर हॉलीवुड की एक प्रसिद्ध फिल्म भी बनी है। यह पुस्तक पाठकों को कल्पना, रोमांच और थ्रिलर की एक अनोखी दुनिया में ले जाती है, जहाँ से लौटना लगभग नामुमकिन होता है।

प्रकाशक: हिन्द पॉकेट बूक्स

आह्वान संख्या: 891.433 B877A **अधिकरण संख्या: 157353**

6. कश्मीरी खिलाफत और हिन्दू नरसंहार/ कर्नल आदित्य प्रताप सिंह

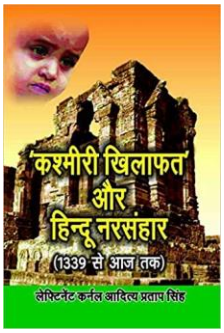

पुस्तक 'कश्मीरी खिलाफत और हिन्दू नरसंहार', जम्मू-कश्मीर राज्य में 1339 से 1819, इस्लामिक शासन काल में हुए वृहद स्तर पर हिन्दू नरसंहार को रेखांकित करते हुए उसकी समीक्षा करती है। क्यूं, कैसे और कब-कब इस प्रक्रिया को मध्ययुग में 5 सदियों तक बार-बार दोहराया गया। नरसंहार के सभी आयामों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया। किस प्रकार इस्लामिक साम्राज्यवाद का दिल्ली सल्तनत काल का स्वरूप कश्मीरी सल्तनत काल से समानता रखता था। कैसे राजनीतिक इस्लाम का बर्बर एवं क्रूर रूप कश्मीरी हिन्दुओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी भयाकुल कर रहा था। कैसे हिन्दू नरसंहार धर्मान्तरण, हत्या, बलात्कार, दासत्व, जजिया कर, धर्मस्थल-विखण्डन, धर्मग्रंथ अग्निसात करने जैसे अनेक क्रियाओं द्वारा सम्पन्न हो रहा था। पुस्तक मध्ययुगीन हिन्दू नरसंहार और आधुनिक स्वतन्त्रा भारत में राजनैतिक इस्लाम के अलगाववादी चरित्रा से जनित हिन्दू नरसंहार का नवस्वरूप वर्णित करने का प्रयास करती है।पुस्तक कश्मीर के प्राचीन इतिहास के संक्षिप्त विवरण, इस्लाम के आगमन के कारण से लेकर अभी चल रही हिंसक इस्लामिक अलगाववादी प्रक्रिया को समझाने का प्रयास करती है। पुस्तक कश्मीर पर शीतयुद्ध के दौरान पश्चिमी देशों की नकारात्मक नीति पर प्रकाश डालती है। हिन्दू नरसंहार के विभिन्न रूपों का वर्णन करने के साथ-साथ कश्मीर में 'दारुल-इस्लाम' की स्थापना के कुचक्र की प्रक्रिया को भी समझाने का प्रयास करती है। धारा-370 का प्रयोग किस प्रकार हिन्दू नरसंहार एवं इस्लामिक अलगाववाद के लिए किया गया?

प्रकाशक: मानस

आह्वान संख्या: 954.6 S617K **अधिकरण संख्या: 157378**

7. जमू-कश्मीर के जननायक महाराजा हरि सिंह / डॉ .कुलदीप चंद अग्निहोत्री

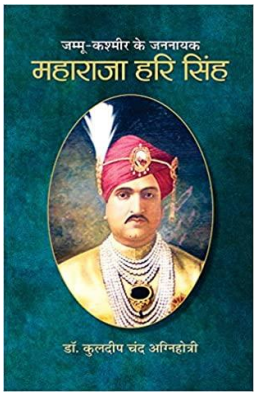

जमू-कश्मीर के अंतिम शासक और उत्तर भारत की प्राकृतिक सीमाओं को पुनः स्थापित करने का सफल प्रयास करनेवाले महाराजा गुलाब सिंह के वंशज महाराजा हरि सिंह पर शायद यह अपनी प्रकार की पहली पुस्तक है, जिसमें उनका समग्र मूल्यांकन किया गया है। महाराजा हरि सिंह पर कुछ पक्ष यह आरोप लगाते हैं कि वे अपनी रियासत को आजाद रखना चाहते थे और इसीलिए उन्होंने 15 अगस्त, 1947 से पहले रियासत को भारत की प्रस्तावित संघीय सांविधानिक व्यवस्था का हिस्सा नहीं बनने दिया; जबकि जमीनी सच्चाई इसके बिल्कुल विपरीत है। इस पुस्तक में पर्याप्त प्रमाण एकत्रित किए गए हैं कि महाराजा हरि सिंह काफी पहले से ही रियासत को भारत की सांविधानिक व्यवस्था का हिस्सा बनाने का प्रयास करते रहे। पुस्तक में उन सभी उपलब्ध तथ्यों की नए सिरे से व्याख्या की गई है, ताकि महाराजा हरि सिंह की भूमिका को सही परिप्रेक्ष्य में समझा जा सके। महाराजा हरि सिंह पर पूर्व धारणाओं से हटकर लिखी गई यह पहली पुस्तक है, जो जम्मू-कश्मीर के अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डालती है।.

प्रकाशक: प्रभात

आह्वान संख्या: 923.654 A259M **अधिकरण संख्या: 157380**

8. सावरकर: काला पानी और उसके बाद' /अशोक कुमार पांडेय

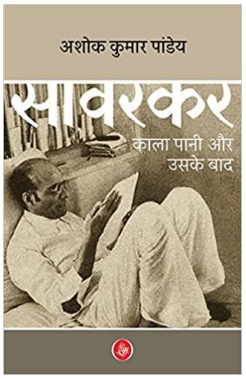

यह किताब एक सावरकर से दूसरे सावरकर की तलाश की एक शोध-सिद्ध कोशिश है। सावरकर की प्रचलित छवियों के बरक्स यह किताब उनके क्रांतिकारी से राजनेता और फिर हिन्दुत्व की राजनीति के वैचारिक प्रतिनिधि तथा पुरोधा बनने तक के वास्तविक विकास क्रम को समझने का प्रयास करती है। इसके लिए लेखक ने सावरकर के अपने विपुल लेखन के अलावा उनके सम्बन्ध में मिलने वाली तमाम पुस्तकों, तत्कालीन ऐतिहासिक स्रोतों, समकालीनों द्वारा ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज़ों आदि का गहरा अध्ययन किया है। यह सावरकर की जीवनी नहीं है, बल्कि उनके ऐतिहासिक व्यक्तित्व को केन्द्र में रखकर स्वतंत्रता आन्दोलन के एक बड़े फ़लक को समझने-पढ़ने का ईमानदार प्रयास है। कहने की ज़रूरत नहीं कि राष्ट्र की अवधारणा की आड़ लेकर क़िस्म-क़िस्म की ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक विकृतियों के आविष्कार और प्रचार-प्रसार के मौजूदा दौर में इस तरह के निष्पक्ष अध्ययन बेहद ज़रूरी हो चले हैं। अशोक कुमार पांडेय ने इतिहास सम्बन्धी अस्पष्टताओं की वर्तमान पृष्ठभूमि में कश्मीर और गांधी के सन्दर्भ में अपनी पुस्तकों से सत्यान्वेषण का जो सिलसिला शुरू किया था, यह पुस्तक उसका अगला पड़ाव है और इस रूप में वर्तमान में एक आवश्यक हस्तक्षेप भी।

प्रकाशक: राजकमल

आह्वान संख्या 891.433 P189S **अधिकरण संख्या: 157381**